Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

ISSN 2319-8648 Impact Factor - 7.139 Indexed (SJIF)

February 2020 Special Issue-22 Vol. 4

The Role of Women in Global Development

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Guest Editor
Principal, Dr.Aqueela Syed Gous

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Special Issue 22, Vol. 4 February 2020 | Peer Reviewed SJIF | ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 7.139

Index

Arts & Commerce Mahila Mahavidyalaya Library Ambajogai

1. डॉ.एनी बेसेंट के भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में योगदान : एक ऐतिहासिक अभ्यास 1
प्रा.राजकुमार ज्ञानोबा चाटे
2. अरुणा असफ अली का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन मे योगदान : एक अभ्यास 4
डॉ.रामभाऊ देवराव काशीद
३. स्त्री और सामाजिक समस्या 6
डॉ.ललिता राठोड
४. प्रशासनिक सुधार 8
प्रा.डॉ. पांडुरंग मुंढे
५. पावरलूम उद्योग में मुस्लिम महिला श्रमिकों की भुमिका का अध्ययन (बुरहानपुर जिले के विषेष संदर्भ में) 10
डॉ. राजेष काले
६. **भारतीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति** 14
डॉ. हिमालया सुनील सकट
७. पर्यावरण संवर्धनाचे महत्व 16
डॉ. बने रेखा रामनाथ
८. विपणनातील आधुनिक प्रवाह 18
प्रा.डॉ.भगवान सांगळे
९. जागतीक विकास आणि महिलांचा राजकिय सहभाग 22
प्रा. डॉ. बोरोळे रजनी अनंतराव
10. न्यायालयीन सक्रियता 26
चौधरी प्रदीप विनायक
११. **यौगिक प्रशिक्षण कार्यक्रमाचा १२ ते १४ वर्ष वयोगटातील जिम्नॅस्टीक खेळाडूंच्या लवचिकता व तोल या घटकांवर होणार्या परिणामांचा अभ्यास** 28
प्रा. दिपक प्रकाश सौदागर
१२. स्त्री आणि पितृसत्ता 31
डिगांबर राधाकीसन जाधवप्रा. , डॉ. गीतांजली भीमराव बोराडे
१३. स्थुलतेमुळे निर्माण होणारे आजार व उपाय 34
डॉ गौतम रघुनाथ शिंदे , डॉ अंबादास फटांगरे
१४. ग्रामीण स्थानिक स्वराज्य संस्थेत महिलांचा सहभाग : एक चिकित्सक अध्ययन विशेष संदर्भ : वाशिम जिल्हा 38
सहा.प्रा. ए.टी. वाघ
१५. 'जागतिक विकासात महिलांची भूमिका – एक अध्ययन' 41
प्रा.डॉ. बालाजी आनंदराव साबळे,
16. भारतातील प्रशासकीय सुधारणाची वाटचाल 44
प्रा.डॉ. डी.के. खोकले
१७. महिलांचा राजकीय सहभाग –एक अध्यन 48
प्रा.दत्तात्रय मुकुंदराव ढवारे

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Special Issue 22 , Vol. 4 | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
February 2020 | SJIF | Impact Factor : 7.139

स्त्री और सामाजिक समस्या

डॉ.ललिता राठोड
प्रोफेसर, बलभीम महाविद्यालय, बीड

स्त्री और सामाजिक समस्या एक दूसरे के पर्याय बन चुके हैं। स्त्रियों के इर्द-गिर्द समाज का ताना-बाना बुना हुआ है। क्योंकि वह इस समाज को `प्रसुत` करने का माद्दा रखती है, उसमें सृजन की शक्ति है। समाज में सबसे बड़ी जिम्मेवारी स्त्रियों पर होकर भी आज वह जलाई, मारी, दफनाई और सरेआम लूटी जा रही है। भारतीय साहित्य का आधुनिक काल ऐसे कई घटनाओं का साक्षी है, जो कभी कलम की स्याही बन चूकी तो कभी कलम की नोक भोथरी होती है। स्त्रियों के जीवन और समस्याओं के विषय में बहुत कुछ लिखा जा चूका है। परंतु आनेवाली कल की कलम ऐसा कुछ न लिखे या उसे मौका न मिले ऐसी आशा जरुर रखती है। अच्छे दिनों के कामना के साथ। शायद समस्याएँ पुरी तरह से खत्म नहीं होंगी परंतु जिस अमानवीयता से भावनाओं के साथ खेला तो जाता ही है, उसी बूरी तरह से उसे रौंदा, मसला जाता रहा है। एक भी दिन ऐसा नहीं जाता कि जिस दिन किसी अखबार की सूर्खियों में स्त्री के ऊपर हो रहे अत्याचारों की खबर ना आयी हो। में किसी और विषय को लेखर लिखनेवाली थी मगर क्या करें? फिर सोशल मीडिया चिख-चिखकर बारामती के माँ-बेटी पर अत्याचार और हत्या को कह रहा है। शायद कोई असंवेदनशील ही होगा, जो इस घटना को देखकर अनदेखा कर देगा। क्योंकि `माँ-बेटी` दोनों के जीवन का अंत एक ही दिन हुआ, एक ही प्रकार से उन्होंने यातनाओं को झेला सच माना जाय तो यह विषय चिंता का नहीं है। विषय यह भी नहीं कि पुलिस प्रशासन को माँ-बेटी के लापता होने की खबर मिलती है, तो वे उसको छान-बीन करने के अलावा उनके हत्या होने तक हाथ-पर-हाथ धरे बैठते हैं। विषय यह भी नहीं की वह किसी विशिष्ट जाति के न होने के कारण वह समाचार पत्रों की खबर भी बन नहीं बन सकी। विषय यह भी नहीं की वह सोशल मीडिया पर किस अंदाज में रखी जा रही है। या फिर से समाज को जाति, धर्म के नाम पर बाँटने की निती है। विषय चाहे जो भी हो सोशल मीडिया पर आये चित्र हमारे शांति प्रिय, विवेकी, सुसंस्कृत, सभ्य समाज के स्त्रियों के मृत्यु की घटना को कहता है। उसके पिछे के कारण कुछ भी हो परंतु स्त्रियों की असुरक्षितता की बात बहुत महत्वपूर्ण है। जिस पर कोई चर्चा-विमर्शों से हल नहीं निकलने वाला हम अपनी आनेवाली पीढ़ी को विरासत में किस सोच को छोड़ने वाले है। यह भी बात महत्वपूर्ण है।

आज किसी भी घर की बेटी (स्त्री) सुरक्षित नहीं है। समीर कुमार के अनुसार,``देश में महिला सशक्तिकरण को लेकर जारी चर्चाओं के बीच आज भी महिलाओं की परेशानियों और उसका उचित समाधान ढूंढने की दिशा में कोई ठोस नतीजा हासिल नहीं किया जा सका है। आज भी महिलायें उतनी सुरक्षित और सम्मानित नहीं दिखती, जितने अधिकार और अवसर उन्हें संविधान प्रदत हैं। वह पीड़ित, प्रताड़ित, भयभीत है और अपने अस्तित्व को लेकर आशंकित भी। यह अलग बात हैं कि महिला दिवस की धूम भारत मं भी ज्यादा रहती है। इन सबके बावजूद आज भी महिलाओं को समाज में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है।``१ आज स्त्रियों की सुरक्षा बहुत बड़ी समस्या बन चुकी है। इसे इस समाज को देखना समझना और अनुपालित करना चाहिए। हमें संविधान के कानुनों के सुरक्षितता के साथ ही अपनों (संपूर्ण देश) का वह सुरक्षितता का बोध भी होना आवश्यक है। कोई भी चिज़ यकायक और एक व्यक्ति के चाहने भर से परिवर्तित नहीं होती, परंतु संपूर्ण समाज अगर अपनी जिम्मेवारी को निभाने के लिए तैयार हो तो शायद कोई बेटी हो या उसकी माँ हो इसी तरह से बली नहीं होती। ना उसका बेटा-बेटी अनाथ होते।

स्त्रियों की असुरक्षितता आज के डिजीटल इंडिया की प्रमुख समस्या बन गई हैं। क्योंकि कोई भी घटना विश्व के पटल पर आसानी से देखी जा सकती है, चाहे वह अच्छी हो या बुरी। स्त्री अब न घर में सुरक्षित है न बाहर। घर में राम उसे जिने नहीं देता और बाहर रावणों की कोई कमी नहीं है। प्रत्येक जगह, स्तर पर स्त्री असुरक्षित है। आज छोटी बच्चियों से लेकर बुढ़ी औरतों तक कोई भी सुरक्षित नहीं है। चंद्रकला त्रिपाठी अपनी कविता के द्वारा `नसीहत` देती है कि,

``साँझ से पहले घर लौट आना
बेटियों के लिए रात-बिरात
चौखट से बाहर की दुनिया जंगल है
शहर में बेधड़क घूमती है
कलेजा हिला देने वाली खबरें
कोई पुकारें कहीं से भी
मुड़ कर मत देखना।``२

यह हमारे समाज का बहुत बड़ा सच है, जिसे हमें स्वीकार करना होता है। अमीर घरों की स्त्रियों की समस्या शायद अलग हो क्योंकि यह समाज ५ से १० प्रतिशत है, बाकी वह आम समाज है, जो भारत को प्रतिनिधित्व करता है। मीड़िया में दिखने वाले मेकअप से लिपे-पुते दिखावटी चेहरे सुंदर नज़र आते हैं परंतु भारत का आज भी चेहरा भोला है, आदिम जीवन में जी रहा है, और `बुर्जुआ` जीवन की सुखों से अनजान बस होड़ में लगा है, दिखावटी पहनावा पहन चुका है, फिर भी अब भी इन समाज की स्त्रियाँ असुरक्षित है। इन सभी स्तरों की स्त्रियों के जीवन का बदसूरत सच मीडिया, समाचार पत्रों के द्वारा समझ में आता है।

स्त्री अब भी अगम्य और रहस्य है। जिसे पाने के लिए उसे दिन-दहाड़े मारा जाता है, जिसको बुझने के लिए लुटा जाता है। इसके पिछे कोई बड़ा षड्यंत्र नहीं, बल्कि विकृति है। `विकृति` अर्थात् `विकृत होने का भाव या खराबी`। `विकृत` मानसिकता यह विषय जटिल है, हम इस